**भारत सरकार**

**वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय**

**उद्योग संवर्धन और आंतरिक व्यापार विभाग**

**लोक सभा**

**अतारांकित प्रश्न संख्या: 1770**

**मंगलवार, 10 फरवरी, 2026 को उत्तर दिए जाने के लिए**

**पीएलआई योजना**

**1770. श्री टी. एम. सेल्वागणपतिः**

क्या **वाणिज्य और उद्योग मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या देश में सक्रिय विभिन्न उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन योजनाओं के परिणामस्वरूप जून, 2025 तक 14 क्षेत्रों में 1.88 लाख करोड़ रुपये से अधिक का वास्तविक निवेश हुआ है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ख) क्या उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन योजनाओं के माध्यम से निवेश के परिणामस्वरूप 17 लाख करोड़ रुपये से अधिक का वृद्धिशील उत्पादन और बिक्री हुई है तथा प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार सहित 12.3 लाख से अधिक रोजगार सृजित हुए हैं;

(ग) क्या उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन योजनाओं के अंतर्गत 7.5 लाख करोड़ रुपये से अधिक का निर्यात हुआ है, जिसमें इलेक्ट्रॉनिक्स, फार्मास्यूटिकल्स, दूरसंचार और नेटवर्किंग उत्पादों तथा खाद्य प्रसंस्करण जैसे क्षेत्रों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है; और

(घ) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

**उत्तर**

**वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय में राज्य मंत्री**

**(श्री जितिन प्रसाद)**

**(क) से (घ):** उत्पादन सम्बद्ध प्रोत्साहन (पीएलआई) स्कीमों की शुरुआत 1.97 लाख करोड़ रुपए के परिव्यय से 14 प्रमुख क्षेत्रों के लिए की गई है। इन स्कीमों के अंतर्गत वृद्धिशील उत्पादन एवं बिक्री को प्रोत्साहित किया जाता है, जिससे चिह्नित क्षेत्रों में नए निवेश को प्रोत्साहन मिलता है तथा विनिर्माण क्षमताओं के विस्तार को बढ़ावा प्राप्त होता है। प्रोत्साहनों के प्रदर्शन-आधारित स्वरूप के कारण प्रतिभागी कंपनियों में उत्पादन में वृद्धि, उच्च कारोबार तथा क्षमता उपयोग में सुधार हुआ है।

देश में 14 प्रमुख क्षेत्रों में लागू इन स्कीमों के अंतर्गत, 30 सितंबर, 2025 तक की स्थिति के अनुसार, 2 लाख करोड़ रुपए से अधिक का वास्तविक निवेश सृजित हुआ है। यह निवेश सरकार द्वारा अधिसूचित सभी 14 पीएलआई स्कीमों के अंतर्गत संसूचित किया गया है। इन क्षेत्रों में व्यापक स्तरीय इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण (एलएसईएम), आईटी हार्डवेयर, फार्मास्यूटिकल्स, चिकित्सा उपकरण, ऑटोमोबाइल और ऑटो घटक, एडवांस्ड केमिस्ट्री सेल बैटरी, दूरसंचार और नेटवर्किंग उत्पाद, खाद्य प्रसंस्करण, वस्त्र, विशेष इस्पात, व्हाइट गुड्स, ड्रोन एवं ड्रोन घटक आदि शामिल हैं।

पीएलआई स्कीमों के तहत किए गए निवेश के परिणामस्वरूप, 30 सितंबर, 2025 तक, 12 पीएलआई स्कीमों के अंतर्गत 18.70 लाख करोड़ रुपए से अधिक का वृद्धिशील उत्पादन एवं बिक्री दर्ज किया जाना संसूचित किया गया है। इसके अतिरिक्त, इन स्कीमों के माध्यम से 12.60 लाख से अधिक (प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष) रोजगार सृजित हुए हैं। पीएलआई फ्रेमवर्क के तहत शामिल सभी 14 क्षेत्रों में कुल 806 आवेदनों को अनुमोदित किया गया है।

पीएलआई स्कीमों का प्रभाव भारत के विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण रूप से पड़ा है। इन स्कीमों ने घरेलू विनिर्माण को प्रोत्साहन प्रदान किया है, जिसके परिणामस्वरूप उत्पादन, रोजगार सृजन और निर्यात में बढ़ोत्तरी हुई है। कुछ प्रमुख क्षेत्रगत प्रभावों में फार्मास्यूटिकल्स क्षेत्र शामिल है, जिसने 2.66 लाख करोड़ रुपए की कुल बिक्री दर्शाई है जिसमें से इस स्कीम के पहले तीन वर्षों में 1.70 लाख करोड़ रुपए का निर्यात लक्ष्य हासिल किया गया है। इस स्कीम ने भारत को थोक ड्रग्स के मामले में वर्ष 2021-22 के निवल आयातक (-1930 करोड़) से निवल निर्यातक (2280 करोड़) बनने में योगदान दिया है। इसके परिणामस्वरूप, घरेलू विनिर्माण क्षमता और महत्वपूर्ण ड्रग्स की मांग के बीच का अंतर काफी कम हुआ है।

इसी प्रकार, चिकित्सा उपकरणों के लिए पीएलआई स्कीम के तहत, 21 परियोजनाओं ने 54 विशिष्ट चिकित्सा उपकरणों का विनिर्माण शुरू कर दिया दिया है, जिसमें हाई एंड उपकरण, जैसे लीनियर एक्सीलेटर (एलआईएनएसी), एमआरआई, सीटी-स्कैन, हार्ट वाल्व, स्टेंट, डायलाइजर मशीन, सी-आर्म, कैथ लैब, मैमोग्राफी, एमआरआई क्वायल इत्यादि शामिल हैं। इलेक्ट्रॉनिक क्षेत्र में,

उद्योग संघ और डीजीसीआईएस के अनुसार, मूल्य के संदर्भ में मोबाइलों के उत्पादन में लगभग 146 प्रतिशत की वृद्धि हुई है और यह वर्ष 2020-21 के 2,13,773 करोड़ रुपए से बढ़कर वर्ष 2024-25 में 5,25,000 करोड़ रुपए तक पहुंच गया है। इसी अवधि के दौरान, मूल्य के संदर्भ में मोबाइल फोनों के निर्यात में लगभग 775 प्रतिशत की वृद्धि हुई है और यह वर्ष 2020-21 के 22,870 करोड़ रुपए से बढ़कर वर्ष 2024-25 में 2,00,000 करोड़ रुपए तक पहुंच गया है।

30 सितंबर, 2025 तक की स्थिति के अनुसार, पीएलआई स्कीमों के अंतर्गत 8.2 लाख करोड़ रुपए से अधिक के निर्यात हुआ है, जिसमें व्यापक स्तरीय इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण (एलएसईएम), फार्मास्यूटिकल्स, दूरसंचार और नेटवर्किंग उत्पाद तथा खाद्य प्रसंस्करण आदि क्षेत्रों से निर्यात योगदान में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। पीएलआई स्कीमों ने घरेलू विनिर्माण क्षमता को सुदृढ़ करने, निर्यात बढ़ाने, रोजगार सृजन करने तथा अनेक रणनीतिक क्षेत्रों में आयात निर्भरता को कम करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

*****